Department of Economics

L.N.D. COLLEGE, MOTIHARI (BIHAR)

(a constitueant unit of B.R.A. University, Muzaffarpur (Bihar)

NAAC Accredited 'B+'

Topic : उपभोक्ता की बचत (Consumer's Surplus)

BA Economics Part I MJC/MIC/MDC (Semester I)

Instructor

Dr. Ram Prawesh

Guest Faculty (Department of Economics)

L.N.D. COLLEGE, MOTIHARI (BIHAR)

उपभोक्ता की बचत (Consumer's Surplus)

उपभोक्ता की वचत क्या है? (What is Consumer's Surplus?)

आप क्रिकेट के बहुत शौकीन हैं। दिल्ली में क्रिकेट का वन-डे मैच देखने के लिए आप एक टिकट के ₹ 1,000 देने को तैयार हैं। यदि आपको अपने मित्र से टिकट उसकी वास्तविक कीमत ₹ 400 में ही मिल जाता है तो आपको ₹600 (= ₹1,000-₹400) की बचत होगी। इसे उपभोक्ता की बचत (Consumer's Surplus) कहा जाएगा। अर्थात

उपभोक्ता की बचत = कीमत जो हम देने को तैयार हैं- कीमत जो हम वास्तव में देते हैं

उपभोक्ता की बचत की धारणा का प्रतिपादन सबसे पहले फ्रांसीसी इंजीनियर एवं अर्थशास्त्री ड्यूपिट (Dupuit) ने 1844 में किया था तथा इस धारणा को उपभोक्ता के लगान (Consumer's Rent) के नाम से पुकारा था। परंतु मार्शल ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'Principles of Economics' में इसके लिए उपभोक्ता की बचत (Consumer's Surplus) शब्द का प्रयोग किया है। प्रो० वोल्डिंग के अनुसार, इस धारणा का संबंध उपभोग से न होकर क्रय से है। इसलिए उनके अनुसार इस धारणा के लिए क्रेता का आधिक्य (Buyer's Surplus) शब्द अधिक उपयुक्त है।

▸ परिभाषा (Definition)

उपभोक्ता की बचत की कुछ मुख्य परिभाषाएँ इस प्रकार हैंः

डॉ० मार्शल के शब्दों में, "किसी वस्तु के उपभोग से वंचित रहने की अपेक्षा उस वस्तु के लिए उपभोक्ता जो कीमत देने को तैयार रहता है और जो वह वास्तव में देता है, उनका अंतर इस तृप्ति की बचत का आर्थिक माप है। इसको उपभोक्ता की बचत कहा जाता है।" (The excess of the price which he would be willing to pay rather than go without the thing over that which he actually does pay is the economic measure of this surplus satisfaction.-Dr. Marshall)

पैन्सन के शब्दों में, "हम जो कुछ देने को तैयार हो जाएंगे और जो हमें देना होता है, इन दोनों के अंतर को उपभोक्ता की बचत कहा जाता है।" (The difference between what we would pay and what we have to pay is called consumer's surplus.-Penson)

नोवेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री प्रो० सैम्युअलसन के अनुसार, "कुल वाजार मूल्य और कुल उपयोगिता में सदैव एक अंतर होता है। यह अंतर एक प्रकार का आधिक्य है जो उपभोक्ता को प्राप्त होता है, क्योंकि इसकी कुल प्राप्ति इसके द्वारा किए गए कुल भुगतान से अधिक होती है।" (There is always a sort of gap between total utility and total market value. This gap is in the nature of a surplus, which the consumer gets because he receives more than he pays for.-Prof. Samuelson)

उपभोक्ता की बचत का माप (Measurement of Consumer's Surplus)

उपभोक्ता की बचत का माप करने संबंधी दो मुख्य धारणाएँ हैं:

(1) मार्शल की धारणा (Marshallian Approach) तथा

(2) हिक्स की धारणा (Hicksian Approach)

उपभोक्ता बचत की मार्शल द्वारा दी गई धारणा (Marshallian Approach of Consumer's Surplus)

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डॉ० मार्शल ने उपभोक्ता की बचत की धारणा को मापने के लिए गणनावाचक उपयोगिता विश्लेषण (Cardinal Utility Analysis) का प्रयोग किया है। यह धारणा वास्तव में कुल उपयोगिता तथा सीमांत उपयोगिता के अंतर पर निर्भर करती है।

उपभोक्ता की बचत का आधार - कुल तथा सीमांत उपयोगिता का अंतर (Basis of Consumer's Surplus-Difference between Total and Marginal Utility)

मार्शल के अनुसार, "एक उपभोक्ता किसी वस्तु की उतनी कीमत देने के लिए तैयार होता है जितनी उस वस्तु के उपभोग से उसे कुल उपयोगिता प्राप्त होती है।" (A consumer is prepared to pay that much price for a commodity as is equal to its total utility - **Marshall**) लेकिन जैसा कि प्रोफेसर जेवन्स ने कुल उपयोगिता और सीमांत बताया उपयोगिता के अंतर को स्पष्ट करते हुए बताया था कि किसी वस्तु की कीमत उसकी कुल उपयोगिता के बराबर नहीं होती बल्कि उस वस्तु की सीमांत उपयोगिता के बराबर होती है। अतएव उपभोक्ता द्वारा खरीदी गई प्रत्येक इकाई की लागत अंतिम इकाई की कीमत के बराबर होती है, परंतु घटती सीमांत उपयोगिता के नियम (Law of Diminishing Marginal Utility) के अनुसार, उपभोक्ता के लिए उपभोग की गई पहली इकाइयों का महत्त्व अंतिम इकाई की तुलना में अधिक होता है। इस प्रकार उपभोक्ता को पहली इकाइयों से एक आधिक्य (Surplus) प्राप्त होता है। एक उपभोक्ता किसी वस्तु को उस समय खरीदना बंद कर देगा जब उसे उस वस्तु की कीमत के रूप में जो त्याग करना पड़ता है वह उस वस्तु की सीमांत उपयोगिता के बराबर हो जाए। अतएव कुल उपयोगिता तथा सीमांत उपयोगिता के अंतर से यह ज्ञात होता है कि उपभोक्ता को किसी वस्तु की खरीदी जाने वाली अंतिम इकाई से पहले वह जितनी इकाइयाँ खरीदता है उनसे अंतिम इकाई से मिलने वाली सीमांत उपयोगिता की तुलना में अधिक उपयोगिता प्राप्त होगी। प्रत्येक वस्तु की विभिन्न इकाइयों से मिलने वाले इस आधिक्य के जोड़ को ही उपभोक्ता की बचत कहा जाता है। अतएव उपभोक्ता की बचत का सिद्धांत घटती सीमांत उपयोगिता के नियम तथा कुल उपयोगिता और सीमांत उपयोगिता के अंतर पर निर्भर करता है।

मान्यताएँ (Assumptions)

उपभोक्ता की बचत का सिद्धांत निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है:

(i) उपयोगिता को गणनावाचक संख्याओं (Cardinal Numbers) में मापा जा सकता है।

(ii) मुद्रा की सीमांत उपयोगिता स्थिर (Constant) रहती है। किसी वस्तु से मिलने वाली उपयोगिता को मुद्रा के रूप में व्यक्त किया जा सकता है।

(iii) प्रत्येक वस्तु एक स्वतंत्र वस्तु है अर्थात प्रत्येक वस्तु की कोई स्थानापन्न वस्तु (Substitute) नहीं होती। इसका अभिप्राय यह है कि किसी एक वस्तु की उपयोगिता पर दूसरी वस्तुओं से मिलने वाली उपयोगिता का प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका 1. उपभोक्ता की बचत
(Consumer's Surplus)

आइसक्रीम की इकाइयाँ	MU/देने को तैयार कीमत (₹)	वास्तविक कीमत (₹)	उपभोक्ता की बचत (₹)
पहली	5	2	3
दूसरी	4	2	2
तीसरी	3	2	1
चौथी	2	2	0
कुल	14	8	6

तालिका 1 इस मान्यता पर बनाई गई है कि रोहन आइसक्रीम का बहुत शौकीन हैं। यद्यपि आइसक्रीम की कीमत बाजार में ₹ 2 है, परंतु वह पहली आइसक्रीम के लिए ₹ 5 देने को तैयार है, दूसरी आइसक्रीम के लिए ₹ 4 तथा तीसरी आइसक्रीम के लिए ₹ 3 तथा चौथी आइसक्रीम के लिए ₹ 2 देने को तैयार हैं। अन्य शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि रोहन को पहली आइसक्रीम से ₹5 के बराबर, दूसरी से ₹ 4 के बराबर, तीसरी आइसक्रीम से ₹ 3 के बराबर तथा चौथी आइसक्रीम से ₹2 के बराबर सीमांत उपयोगिता प्राप्त हो रही है। वह चार आइसक्रीम खरीदेंगे क्योंकि चौथी आइसक्रीम की सीमांत उपयोगिता तथा कीमत बराबर है। इन चारों आइसक्रीमों से रोहन को जो उपभोक्ता की बचत प्राप्त होगी उसका माप निम्नलिखित ढंग से किया जा सकता है:

कुल उपयोगिता = सीमांत उपयोगिता का जोड़ = 5 + 4 + 3 + 2= ₹ 14
कीमत या सीमांत उपयोगिता जिसका त्याग करना पड़ा = 2 × 4 = ₹ 8
उपभोक्ता की बचत ₹14 - ₹ 8 = ₹ 6
उपभोक्ता की बचत = TU (∑ MU) - PQ

[यहाँ, CS = उपभोक्ता की बचत; TU = कुल उपयोगिता; P = कीमत; Q = वस्तु की मात्रा; ∑ = Summation (यह जोड़ का चिह्न है); MU = सीमांत उपयोगिता

रोहन आइसक्रीम की चार इकाइयों के लिए ₹ 14 देने को तैयार है परंतु वास्तव में वह ₹ 8 देता है। अतः रोहन को प्राप्त होने वाली उपभोक्ता की बचत ₹ 14 - ₹ 8 = ₹ 6